Title: Felicitations to Speaker

1609 hours

[Mr. Speaker (Shri Ganti Mohana Chandra Balayogi) in the Chair]

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (LUCKNOW)

*m01

Mr. Speaker (Shri Ganti Mohana Chandra Balayogi) : अभ्यक्ष महोदय, लोक सभा के अभ्यक्ष पद पर निवाचित किए जाने के लिए मैं आपको हृदय से बधाई देता हूँ और आपका सज्जनन करता हूँ। आप लोक सभा के लिए नए नहीं हैं। १०वीं लोक सभा के साधन के रूप में हम आपकी क्षमता और आपके योगदान से परिचित हैं।

प्रमोद विकास और क्रीम में आपकी निर्णयशीलता ही है और हम विश्व में आपके भाषण लेकर लोक सभा में इम्तने दूल्हे थे। लोक सभा से पहले आप निला परिषद के माध्यम से अपने शोध और समाज की खेलते रहे हैं। आप कानून की विवादास्ती रहे हैं। गरीबों को, नैनो-कॉम्प्यूटर के नाते आपके लेखन पर सहायता मिलती रही है। आप नब देश स्तरीत्व की ५०वीं वर्षगांठ मना रहा है तो आप वे गौरव की बात है कि अनुशंसित जाति का एक समान नाम सदन लोक सभा अभ्यक्ष के पद को अलर्जुट कर रहा है।

अभ्यक्ष महोदय, आपने बड़ा कठिन कार्य सम्पन्न किया है और वह कार्य बड़ा कठिन समय में सम्पन्न है। जनता ने अपना आदेश दे दिया। इस सदन की जो गतन के बाद राज्य पंचायत है, वह आपके काम को और भी मुख्यता बनाती है, लेकिन आप ऐसे आसन पर बैठे हैं जिससे सराय सिलेंडर भाई क्लेट ने सुझावित किया था,

श्री मानवता इस सदन का संचालन कर चुके हैं। इस सदन की दो पूर्व अभ्यक्ष श्री शिवराज पाँचवल और श्री संगमा इस समय सदन में उपस्थित है।

... (व्यक्ति)

अभ्यक्ष महोदय, अभ्यक्षपीठ में, अभ्यक्ष के आसन में जुड़े ऐसी गुणवत्ता है कि

... (व्यक्ति)

KUMARI MAYAWATI (AKBARPUR)

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : कि आप ही यदि उनका दूरपयोग करें तो

... (व्यक्ति)

MR. SPEAKER: Kumari Mayawati, please be seated.

... (Interruptions)

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (LUCKNOW)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इस आसन पर बैठने वाले को अपने दशवर्त का नियोजन करने के लिए मैं नामा जाता है।

... (व्यक्ति)

MR. SPEAKER: All of you may please be seated.

... (Interruptions)

एक माननीय सदस्य : एक दलित महिला बोल रही है, सुन लीनिए।

... (व्यक्ति)

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (LUCKNOW)
श्री अटल बिहारी वाजपेयी: हम सभी ने पुरानी पश्चिमियाँ हैं।

... (व्यवस्थापन)

विक्रमादित्य के सिहासन पर बैठकर

... (व्यवस्थापन)

अपनी कृपालुता दिखाई थी। ... (व्यवस्थापन)

एक माननीय सदन : दलितों को पुरस्कार दे रहे हैं तो दलित महिला की बात युन लीफिये अटल नी।

... (व्यवस्थापन)

MR. SPEAKER: Please be seated.

... (Interruptions)

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (LUCKNOW)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: यह सदन एक दलित कानून को सरल बना सकता है अगर यह सदन नियमों के अनुरुप चले। हम विश्व को सबसे बड़े लोकतांत्र होने का दावा करते हैं और यह राय सही भी है लेकिन

... (व्यवस्थापन)

अध्यक्ष महोदय : यह जरूरी नहीं है। आप लोग बैठ जाएं।

... (व्यवस्थापन)

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN (BAHRAICH)

श्री आरिफ मोहम्मद खान (बहराइच): प्रधान मंत्री जी सदन को परिपत्रियों से महली-भाषी परिचित है। माननीय प्रधान मंत्री जी एक मिनट के लिए भी बोलने का योग्य नहीं थे ही।

... (व्यवस्थापन)

MR. SPEAKER: Shri Arif Mohammad Khan, please be seated. You will be permitted to speak.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please be seated.

SHRI MUKUL WASNIK (BULDANA)

श्री मुकुल वास्निक (बुल्डाना): अध्यक्ष महोदय, यह एक दलित महिला की आवाज बचाने को कोशिश होगी।

... (व्यवस्थापन)

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Sir, I should be allowed to continue.

अध्यक्ष महोदय: प्रधान मिनिस्टर साहच बात कर रहे हैं, आप बैठिए।
MR. SPEAKER: You will be given permission to speak.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (LUCKNOW)

You will be given a chance.

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN: Sir, I am on a point of propriety.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Mr. Speaker Sir, I should be allowed to complete.

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN: Sir, let the Prime Minister be gracious enough to allow the Leader of the BSP to have her say as she also belongs to a Scheduled Caste. Sir, we are in the 50th year of Independence. Can
he not be gracious enough to allow the Leader of the BSP who also belongs to a Scheduled Caste to make her observations? Let him show some grace....(interruptions)

MR. SPEAKER: This is not good on your part because the Prime Minister is on his legs. Please be seated.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: The Prime Minister is on his legs now. Please be seated. This is not good to interrupt.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Silence please. The Prime Minister is on his legs now.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Madam, please be seated. This is not good.

... (Interruptions)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH): Sir, let him kindly yield to a dalit lady Member.

अध्यक्ष महोदय : प्राइम मिनिस्टर साहब चोल रहे हैं, आप बैठिये

... (व्यक्तिगत)

SHRI VILAS MUTTEMWAR (NAGPUR)

श्री विलास मुंतेमवार (नागपुर): आप उनको खुद तो सीमित

... (व्यक्तिगत)

SHRI MUKUL WASNIK (BULDANA)

श्री मुकुल वासनिक (बुल्डाना): अध्यक्ष महोदय, कभी एक परिवार महिला को बोलने नहीं दिया जायेगा जो गरीबों की दुःखी देने की कोशिश कर रही है।

... (व्यक्तिगत)

SHRI MUKUL WASNIK (BULDANA)

श्री मुकुल वासनिक : अध्यक्ष महोदय, ये परिवारों की दुःखी

देते हैं और परिवार सदस्य को बोलने का समय नहीं दे रहे हैं।

... (व्यक्तिगत)

SHRI AJIT JOGI (RAIGARH)

श्री अजित जोगी (रायगढ़): अध्यक्ष महोदय, इस दृष्टिकोण से यह रहे हैं कि परिवार महिला को बोलने का समय देनिये।

... (व्यक्तिगत)

MR. SPEAKER: Please be seated.
... (Interruptions)

MR. SPEAKER: The Prime Minister is on his legs.

... (अवधान)

KUMARI MAMATA BANERJEE (CALCUTTA SOUTH)

कुमारी ममता बनर्जी (कলकत्ता उपनगरी): अभ्यक्त महोदय, वे लोग शोर कर रहे हैं? ऐसे अवसर पर ऐसी बातें नहीं कही जाती हैं।

... (अवधान)

अभ्यक्त महोदय: आप कृपया बैठ जाएं। सच्चाई को बोलने का मौका दिया जाएगा। प्रधान मंत्री बोल रहे हैं।

... (अवधान)

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुष्मा स्वराज (सधौर): अभ्यक्त महोदय, माननीय सदस्यों को मानुष होना चाहिए कि ऐसे अवसर पर इस प्रकार से अवधान खड़ा नहीं करते हैं। ये अपनी पाठ्य को नैतिक है, उनको जब बोलने का अवसर मिले, तब ये अपनी बात कह सकते हैं।

... (अवधान)

SHRI SATYA PAL JAIN (CHANDIGARH)

श्री सत्यापल जैन (चंडीगढ़): सदन में प्रतिपक्ष के नेता मौजूद हैं। नेता उनसे आशा है कि ये इनको चुप कराए। यदि इस प्रकार से ये प्रधान मंत्री ने बोलने से रोकने का प्रयास करेंगे, तो

we will not allow him to speak. ...

(अवधान)

अभ्यक्त महोदय: कृपया बैठ जाएं। प्रधान मंत्री महोदय बोल रहे हैं। कृपया बैठ जाएं।

... (अवधान)

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN (BAHRAICH)

श्री आरिफ मोहम्मद खान: अभ्यक्त महोदय, नेता आशा है कि आप दलित महिला को बात खुन लोगिए।

... (अवधान)

अभ्यक्त महोदय: इस प्रकार से बीच में बोलना नहीं है। कृपया आप बैठ जाएं।

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (SOUTH DELHI)

श्रीमती सुष्मा स्वराज (सधौर): अभ्यक्त महोदय, माननीय सदस्य परिषद को बात कह रहे हैं, उन्हें मान्यता होना चाहिए कि यह अवसर उनके बोलने का नहीं है।

... (अवधान)
MR. SPEAKER: While the Prime Minister is speaking, it is not good to interrupt. Please be seated.

... (व्यवधान)

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN (BAHRAICH)

श्री आरिफ मोहम्मद खान: अभ्यक्ष महोदय, मैं आपसे शिक्षा इतना ही कह रहा हूँ की माननीय प्रधान मंत्री एक मिनट को लिए बैठ नाएं और दलित महिला की बात सुन ले। ... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Arif Mohammad Khan, I have not permitted you.

... (व्यवधान)

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (LUCKNOW)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अभ्यक्ष महोदय, यदि अभ्यक्ष को बवाल देना भी अपराध है, तो मैं जबक अपराधी हूँ।

... (व्यवधान)

16.29 hrs.

Kumari Mayawati and some other hon. members then left the House.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (LUCKNOW)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अभ्यक्ष महोदय, लोक सभा के चुनाव के बाद हम पहली बार आज यहाँ एकत्र हुए हैं और मैं तो प्रतिपक्ष को बन्यावाद देना चाहिए था। व्यक्तिगत प्रतिपक्ष के नेता श्री शाहिद पवार जी को, जिन्होंने आपका स्वागत याद नहीं किया दिया।

... (व्यवधान)

लोकतंत्र में स्वतंत्रता बढ़ानी। कल में प्रतिपक्ष में बैठा था। 40 साल में, बारह में काननदेश को चोकर गैरने प्रतिपक्ष से देश की सेवा की है। सदन में योगदान दिया है। जनता का निर्गम शिक्षावर्धन होना चाहिए।

... (व्यवधान)

मुझे पर सदस्यों को इस सदन में सारे काम-काज को अस्त-अस्त करने का अधिकार नहीं होना चाहिए। ऐसा मौका नहीं मिलना चाहिए।

अभ्यक्ष महोदय, मैं यह कहने चाहा था कि यह सदन आज की कविताओं को कम कर सकता है, अगर सदन नियमों के अनुसार चले, अगर सदन अपने आचरण, अपने वचन-व्यवहार में गारिया का पालन करे।

... (व्यवधान)

आज सारी दुनिया हमारे सदन को ओर देख रही है। जो देश अभी-अभी आजाद हुए हैं और भिन देशों ने अभी लोकतंत्र अपनाया है, वे हमारे यहाँ लोकतंत्र की शिक्षा लेने के लिए, पढ़ा पढ़ने के लिए आते है। पता नहीं हम कौन सा पाठ उन्हें पढ़ाना चाहते हैं। आज जो सुख हुआ है, वह पाठ पढ़कर बदरे जे अपने देश में गये, तो फिर लोकतंत्र का प्रेरणादायक अद्यावधि में पढ़ सकता है। ... (व्यवधान)

अभ्यक्ष महोदय : यह अच्छी बात नहीं है।

... (व्यवधान)

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (LUCKNOW)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अभ्यक्ष महोदय, मैं एक बार फिर आपको बवाल देता हूँ। आपका अभिव्यक्त करता हूँ और आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप सदन के सभी विभागों के अधिकारी को रक्षा के काम में हमारा पूरा सहयोग पाएगे। बहुत-बहुत बन्यावाद।
एक सर्नगर जी थे। जब भी लोगों ने निम्नमूल्य संगठन में, वे सी.पी.ए. संगठन थे। उनका यह उल्लेख करने में मुझे गरीब लगा है। अपने स्थान की स्थिति अंतर्गत है। इस देश की जनता ने निस्तर कर नेनेट्टे दिया और सड़न का जो रचना हुई है, मुझे लगता है कि इसके बाद हम सबके तंत्र बहुत कुछ निम्नमूल्य आधार है। सड़न को गार्व रखनी हो, अपने संसदीय संस्थाओं का गृहहरण करने का बात है, यहाँ से बहुत कुछ फायदा करने का संबंध हम सबके सामने आया है। आप खुश देखे लोक समान में सदस्य थे और इसलिए यह लोक समाज आपके लिए कई नई नहीं है। आपने अपने सामाजिक जीवन का कारोबार बढ़ाना राज के सुरू किया, जिला परिषद की निम्नमूल्य सामाजिक संगठन, सड़न में आए और दिखाए कई सालों तक आपने आत्म प्रदर्शन में यहाँ के विवाद समा के सदस्य के नाते और बाहर की सरकार के मंत्री के नाते निम्नमूल्य संगठन थी। आप समाज के पिछड़े हुए वर्ग से आते हैं और इसलिए जिस समाज का पिछड़ा वर्ग है, उनको जो परिवर्तित है, वह आप बहुत अच्छी तरह से जानता है। आप निश्चित हैं और मुझे विश्वास है कि जिस तरह सामाजिक जीवन में आपने पिछड़े कई सालों में काम किया है, उसका अनुभव आपको यद सड़न चलाने में मददगार होगा।

इस चुनाव के बाद की परिस्थिति देखने के बाद हमें यह मानना होगा कि इस देश में सारा सरकार चलाने की परिस्थिति पैदा हुई है। अगर-अगर प्रकार की परिस्थितियों को लेकर काम करने की परिस्थिति पैदा हुई है और समस्ती की नीति का प्रकार करना हमारा चाहना हो गया है। मुझे खुशी होती प्रति हम पहले संबंधित से निर्माण लेने की प्रक्रिया शुरू कर सकते। मैं नहीं नाम यहाँ बूढ़ा बूढ़ा, उतना भी। वह जो निम्नमूल्य आपके किच्चे पर पड़ी है, मुझे विश्वास है कि आप इस सड़न को गर्व रखने और प्रजातंत्र को मजबूत रखने में कामयाब होगें।

मैं अपनी पार्टी की तरफ से, मैं अपने सब साधनों की तरफ से आपकी विश्वास दिखाना चाहता हूं कि सड़न का काम करता है। बस तरह से चलाने में हम सबका आपका पूरा-पूरा योगदान रहेगा। आपको यह जानकर देखना होगा, इस सड़न की परिस्थिति देखने के बाद, जो विवाद में बैठे हुए हैं या शासन में बैठे हुए हैं, उनकी लंबी कुछ भी है, लेकिन सदस्यों के अधिकार के बारे में जो सुधार सामने आई है, उसकी प्रतिक्रिया बनाने रखने का काम आपको यहाँ करना होगा और इस बारे में में इस सड़न में मेरे और मेरे साथी के आपको सहयोग रहेगा।

यह कहकर मैं पुनः आपका भाग्यवान करता हूं।
I am sure that you will maintain the equidistance which was promised by our good friend the Chief Minister of Andhra Pradesh.

I cannot conclude by paying my respect to you without expressing our deepest sense of appreciation of the manner in which your predecessor discharged his duties and functions. He showed exemplary conduct as Speaker. I must pay my tributes to Shri P.A. Sangma. I hope he is present here! He should be known as one of the ablest Speakers this House has ever had. ...(Interruptions)... I have some humble experience of this House and so I can say this with confidence. The way the Special Session was organised by Shri Sangma as the Speaker speaks volumes of his commitment to the basic fundamentals of our Republic and our Constitution. We cannot but express our commitment once more to the Resolution which was adopted unanimously at the end of that Session. As to how far that is being maintained, we will have to see in the days to come.

We are happy that you are here. But I only wish, as the Leader of the Opposition has said, there was a consensus. But that was not to be. Merit has been sacrificed at the altar of political expediency. Even then, Sir, you have our fullest support. We offer you our fullest cooperation. I wish you a brilliant tenure as the Speaker of this great institution.

*m04
SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): Mr. Speaker, Sir, it is only in a democracy in the truest sense of the term that the leader of leaders could emerge from totally unexpected quarters. Your election to lead and guide this House is proof that we are a democracy in its every sense.

My heartiest congratulations to you. I have always believed that if the future of our country is to be made safe for domestic peace, democracy and peoples' welfare, we should hold out hope for our youth. You are young, Sir, and I hope that your election would send the right signals to the youth of our country.

The Chair to which you have been chosen by this House calls for enormous wisdom.

The term 'Bala Yogi', literally translated, means the Young Sage. Sages are persons of great wisdom. For the aged, wisdom comes from experience. For the young, wisdom flows from their instinct, an alert mind and heart. I hope that you will be immensely guided by your youthful instinct and mindful and hearty wisdom. By your name, you are also 'Mohana Chandra', which literally translated again, means the 'lovely moon'. Let the coolness of the moon temper your reflexes and environment in the House.

You have found your elevation to the exalted Chair of this popular Chamber virtually straight from the din and dust of grassroots politics. I am hopeful that your reflexes and decisions would be impacted by the wisdom flowing from this grassroots experience as well.

This House has had the delightful experience of being guided from the Chair you have come to occupy during the later half of 1950s and early 1960s by the enlightenment of a great son of Telugu world, Late M.A. Iyengar, who represented the Tirupati constituency of erstwhile State of Madras. Let the spirit of the late Iyengar and the blessings of Lord Venkateswara, the presiding deity of Tirupati, guide you in your management of this House.

Let me also take this occasion to place on record my very deep appreciation of the immense and unreserved cooperation extended to me by all sections of the Eleventh Lok Sabha in my sincere efforts to maintain the dignity of the institution of the Speaker. I also extend my welcome and best wishes to all the Members of this House, oldtimers as well as freshers.

*m05
कुमारी ममता बनर्जी : अभ्यस्म महादेव, मैं तुम्हारे कॉर्स की ओर से अपने बचाई देना चाहती हूं। मैं गर्भ एवं जो को भी बचाई देना चाहती हूं। अत्यलंबित वाक्यसौंदर्य भी ने वह अपने नाम प्रसारित किया और अपना भाषण हूक किया तो उस समय जो गतान्तरण यहाँ करा, न्येशनल र यह डाक्स को परम्परा से आत्मसात दूषित नहीं था। स्पीकर इलेक्ट्रॉन के साथ हमारे डाक्स का फॉर्मूल कर है, हमारी परम्परा है

... (व्यक्तिप्रवृत्ति)
This is most unfortunate. First please listen to what I am saying. I am congratulating not only the Leader of the House but also the Leader of the Opposition of this House, Shri Somnath Chatterjee and Shri Sangma. (Interruptions)

Now that we are taking part in a debate, we must maintain decorum. After the election of the hon. Speaker, everybody must congratulate him. Shri Atal Bihari Vajpayee, Shri Somnath Chatterjee, and Shri Sangma congratulated him. Today we must all congratulate him. I have seen from my own eyes when Dr. Balram Jakhar was elected as the Speaker of this House, everybody congratulated him. I have seen Shri Shivraj Patil being elected as the Speaker of this House. I have seen Shri Sangma being elected as the Speaker of this House. We must also convey our gratitude to all our former Speakers. They worked a lot to uphold the democratic system in this country. We are grateful to all of them. At the same time, from the Government side, may I appeal to all of you to please not only listen to the Leaders but also listen to us who are grassroot-level workers?

On behalf of my Party, Trinamul Congress, we assure you all cooperation and follow whatever guidance you will be giving us. The need of the hour today is that we must have a stable Government. Then people do not want elections every year. The people do not want that their money should be spent on holding elections. So, they want to have a stable Government. Sir, the alphabet 'A' is very lucky now. The Prime Minister's name also starts from 'A', and the hon. Speaker who belongs to Andhra Pradesh, and the name of his State also starts from 'A'. We all congratulate him.

मैं एक रोर कहना चाहती हूँ:-

बदल जाए आगर माली, वचन होता नहीं खाली,

बढ़ारे फिर भी जाती है, बढ़ारे फिर भी आएगी।

*म०06

श्री राम विलास पासवान (हामिनपुर): अभ्यक्त जी, आपके लोक सभा के अभ्यक्त होने पर मे जनता इस की ओर से आपको बहुत-बहुत मुबारकबाद देना चाहता हूँ, और जोर देकर कि सदन के नेताओं ने और विपक्ष के नेताओं ने जिस अभ्यक्त ने कहा कि वह सदन को गरिमापूर्ण और वह सदन लोकतंत्र की सहरी मशक्ति है तथा उस संस्था के अभ्यक्त की रूप में नियोजित किए गए थे। आप यह अभ्यक्त मानाते देखते है कि आप संवेदनशील से है या बहुमत से है या सर्वाधिकार से है लेकिन अब आप सदन के अभ्यक्त हैं और यहुदी पत्रि उम्मीद है कि जो सदन को गरिमा, वह सदन को गरिमा आपको हाव में सुरक्षित रहेगी। आप इसका अभ्यक्त में संगमा साहब अभ्यक्त की पद पर नहीं है लेकिन इस सदन के सदस्य के रूप में यहू और अभी इसमें साहब ने कहा कि नहीं हावे इसमें श्री शिवाजी पाटेल सहब, श्री वल्मीकि गावकर सहब और इस तक आए गए तब लोगों को गाहक इस सह कर करते रहेगी। मैं संगमा सहब की बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ कि इस गरिमा की, इस परम्परा को आपने बनाए रखा। आप यह अभ्यक्त के पद पर है या नहीं है लेकिन इसके हाव ने आपको सस्पेंड और मैं समझता हूँ कि जो आपने पिसाल काम की है, वह पिसाल हम सब के लिए एक मार्गदर्शक का नाम करायेगी। जो सदन का राजनीतिक है, उसके भी मार्गदर्शक का नाम कराती रहेगी।

अभ्यक्त जी, आप हावे पर बहुत साथी रहे है, दसही में सभा में रहे हैं, नकदी से हम लोगों को जनते हैं। आप मेरे नामस्कार हैं, मीनकार हैं, आपने जनते हैं और मे समझता हूँ कि साहब के साथ-साथ मैं अभ्यक्त के पद पर आप हैं, उस अभ्यक्त पद की गरिमा आपको इस में सुरक्षित रहेगी। इस नब्बे के साथ मैं आपको एक बार फिर से बहुत-बहुत धन्यवाद और बधाई देंगे।

MR. SPEAKER: I now call upon Shri R. Muthiah to speak.
THE MINISTER OF SURFACE TRANSPORT (SHRI R. MUTHIAH): Mr. Speaker, Sir, I am extremely happy and proud in congratulating you for having been elected to the precious post of Speaker of Lok Sabha in this parliamentary democracy.

As I come from the South, with all gratefulness I really appreciate and thank the Members of this Lok Sabha for having elected one of our colleagues from our brethren State to the post of the Speakership of this House.

Sir, again it has been proved, by your election, that in this country and in our democracy, a dalit is capable of handling any task assigned to him. You had been a Member of this House earlier for a term from 1991 to 1996 and had been a Member of the Andhra Pradesh Legislative Assembly for quite a number of terms. With all such experiences, I am sure that you are fully thorough with the parliamentary practice and rules. You had also been a Minister and the Chairman of a Zila Parishad in Andhra Pradesh and so, you are quite familiar with the administrative system in the country. Hence, I hope and I am sure that you will succeed in this 'risk' too. Sir, why I am quoting the word 'risk' in this job is due to my vast experience in the Legislative Assembly of Tamil Nadu as the Speaker for a full term of five years.

I hope and trust that you will succeed in this endeavour too as you were successful in all the assignments given to you in the past.

With these words, I once again congratulate you on behalf of myself and on behalf of my party, AIADMK, headed by our leader, Puratchithalaivi Dr. Jayalalitha.

17.00 hrs.

SHRI MULAYAM SINGH YADAV (SAMBHAL): अध्यक्ष महोदय, आपको सर्वोच्च पद पर चुने जाने पर हम अपने हर की तरफ से आपका अभिनव स्वागत करते हैं और आपको बधाई भी देते हैं। मुझे याद आता है कि आप इस सभा की परम्पराओं का नियमन करते थे। इसके बाद निर्माण नहीं है कि आपका अभिनव करते थे कितने उपचार विषयों में। फिर है दिन से परम्परा दूर नहीं हैं। इसी तरह से हम लोग कहीं बैठे जाते हैं, तो आपको विदेश भी नहीं हैं। आप हम पीछे छूट रहे हैं, तो फिर बह बढ़ जाने। हमारे ही निद से हम लोग कहीं बैठ जाते हैं, तो आपको विदेश भी नहीं हैं। आप हम पीछे छूट रहे हैं, तो फिर बह बढ़ जाने। हमारे ही निद से हम लोग कहीं बैठ जाते हैं, तो आपको विदेश भी नहीं हैं।

Why I am quoting the word ‘risk’ in this job is due to my vast experience in the Legislative Assembly of Tamil Nadu as the Speaker for a full term of five years.

I hope and trust that you will succeed in this endeavour too as you were successful in all the assignments given to you in the past.

With these words, I once again congratulate you on behalf of myself and on behalf of my party, AIADMK, headed by our leader, Puratchithalaivi Dr. Jayalalitha.

17.00 hrs.
वे ने कहा और हम उसे सुना। हम ने उसे सुना और हम ने सुना। वे ने कहा और हम उसे सुना।

(अभ्यास)

अभ्यास जी, आप निष्कासन करेंगे इस परिच्छेद को लेकर हम देश का आज बाहर बाहर है। देश के सामने वह एक तफावती मूल्य है, जून-पूर्ण है। हम उसी से राज-राज देश के सामने बहुत बड़े खट्टर हैं। उन खट्टरों में आप इस साधारण पर आसन्न हैं। हमें देखा है कि निन्हें करने के लिए आपका अपने एक धरोहर को एक रबर को कठिन करने तथा इस देश की बहुत बड़ी सेवा होगी। लोगों की सेवा की तीन अन्य वजह देश के बेहतर हैं। आपको जिस साधारण देश पर जाने का सबूत प्राप्त हुआ है उसमें हम खुश हैं, नाराज नहीं हैं लेकिन वह प्रक्रिया अथवा गाड़ी नहीं तथा प्रचलित सबूत है जब आपको तो हम पहले ही मान ले।

(अभ्यास)

हम तो सच बोलता जाता है।

(अभ्यास)

अभ्यास जी, आप विभाग में बैठे हुए माननीय सभियों का हमेशा ध्यान रखिए। किसी को ना कि आप निष्कास ना कि आप निर्मित ना कि आप रहें। अभ्यास जी, आप निष्कास का इन्फो रहें। हम उसी से राज-राज देश के सामने बहुत बड़े खट्टर हैं। उन खट्टरों में आप इस साधारण पर आसन्न हैं। हम उसी से राज-राज देश के सामने बहुत बड़े खट्टर हैं। उसमें हम खुश हैं, नाराज नहीं हैं लेकिन वह प्रक्रिया अथवा गाड़ी नहीं तथा प्रचलित सबूत है जब आपको तो हम पहले ही मान ले।

*=m09

श्री लालू महावर (मेरेपोरु): अभ्यास महावर, मुझे आप हार्दिक प्रसन्नता हुई है। आप से वहीं देश की राजनीति की असमर्थन का चल रहा थी, भारतीय जनता पार्टी और उनके आलाइ

(अभ्यास)

अभ्यास नहीं, यह भाषा का आवाज नहीं है, यह गंगरी प्रचार है। युगलों की राजनीति करने में सिवाय भारतीय प्रधानमंत्री ने लगभग भी नहीं थी। (अभ्यास) आप बैठे हैं, आप न हो ये यह तिथि है तो यह ... (अभ्यास) अभ्यास महावर, देने यह सुना कि हम देश का एक नेता, जनरलपंकियाओं में विवाह रखने वाले एक नेता ने यह कहा है कि हम सर्वोपरि और भारतीय जनता पार्टी से समर्थन हुआ। इसका मानना दिल्ली न्यू टाउन ग्रेनर। लेकिन न्यूटाउन ग्रेनर में कोई गाड़ी चलती नहीं है और एक खपूट यह आया था कि वह गाड़ी टॉप ग्रेनर में चलती थी। इसमें आवेदनों को की बोल देना, उस पर बोल खुश हुई है। हम देश की राजनीति शिव और टेक की हो गई है। अभ्यास महावर, अज्ञात को राजनीति का पीछा चल रहा है उसके हम लोग व्यक्तियों की परेशानी को समझ सकते है। मैं तो दिल्लीन के यह माना था, मैं चाहता था कि डीलियन हो, कम्युन मूलिक की राजनीति करना चाहिए, निकालने को राजनीति करना चाहिए, लेकिन डीलियन नहीं हुआ। आप अभ्यास करे, मैं आपका अभिन्नता करता हूँ और मेरे द्वारा आपकी पूर्व समर्थन रहेगा। यह भाषा की गार्ड जनता की सबसे बड़ी पंखुत्या है और इस पंखुत्या के मर्ममात्य पर आप बैठे हुए हैं। इस गार्ड के निर्णय करने में मेरे द्वारा पूरा समर्थन रहेगा।

माननीय प्रधान मंत्री जी ने सहन को सम्मोहित कर रहे थे तो बहुत बारे हम सुन नहीं पाए। आपको निलम परिचालन का सहारा प्राप्त है। मैं उस चेहरे में नाना नहीं चाहता। यह वह परिवर्तन नहीं है। यह राष्ट्रीय मंदिर से सबसे गरीब, लालच, सिवाय, तथा मंडलीकृत कार्य और किर्मवृक्ष दुर्गम के चोट लगें है, उनके दिचारों और समस्याओं को यहाँ पर रखा जाता है।
श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा)

श्री लालू प्रसाद: लालू जी, आप चेयर को एडेस करिए।

... (व्यवस्था)

अभ्यस्त न्योधय: लालू जी, आप चेयर को एडेस करिए।

SHRI LALU PRASAD (MADHEPURA)

SHRI LALU PRASAD (MADHEPURA)

SHRI LALU PRASAD (MADHEPURA)

SHRI LALU PRASAD (MADHEPURA)

SHRI LALU PRASAD (MADHEPURA)

MR. SPEAKER: Shri K. Yerrannaidu.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please be seated. I have called Shri Yerrannaidu.

SHRI K. YERRANNAIDU (SRIKAKULAM): Hon. Speaker, Sir, I feel it a great honour to welcome you to this coveted post. I am personally all happy to see you in this esteemed position as a person known to me for the last twenty years. I feel proud to inform the House that I have known Shri G.M.C. Balayogi as a classmate and a good friend of mine from Andhra University as a law graduate. Shri Balayogi had shown his leadership qualities and dynamism during his tenure as a student of Law College of Andhra University.

I am also proud to share with the House the information that Shri G.M.C. Balayogi hails from a hilly village, born in a poor family, and is committed to the poorer section. As the Zila Parishad Chairman of the East Godavari district, he has made a lot of contribution for infrastructure development and also for basic minimum services. In the last five years, he has been appreciated by all people from the East Godavari district with fond memories. He is also being appreciated by one and all as a Minister of Higher Education of the Government of Andhra Pradesh. His rich experiences as a Cabinet Minister to the State Government and also as Chairman of Zila Parishad would certainly help him in discharging his duties as the Speaker of Lok Sabha.
I would like to share with the House that in a Parliamentary democracy the Speaker's position is very crucial. This post was held by great legal and political luminaries like Shri Anantasayanam Iyengar, Shri Mavalankar, Shri Neelam Sanjeeva Reddy, Shri Shivraj Patil, Shri P.A. Sangma and other good persons. I call it as a very historic day because, for the first time, a person from the weaker sections is being elevated to this honour. The Telugu Desam Party which believes in social justice feels honoured in proposing Shri Balayogi for this coveted post and delighted to see him as the Speaker of Lok Sabha.

I would like to congratulate and thank all the Members and all the political parties who have supported and elected Shri Balayogi as the Speaker of this House. In this regard, I would like to convey my deepest felicitations and congratulations to Shri Balayogi and offer him the unstinted cooperation from the Telugu Desam Party in the proper conduct of the House. Now that election of the Speaker is over, I appeal to all the Members and the political parties, to cooperate with the Speaker in conducting the proceedings of the House in a dignified manner as envisaged in the Constitution. You are aware of the fact that running this House is not an easy task but I am sure that with able qualities that Shri Balayogi possesses, he would come out with flying colours in running the House.

I pray to the Almighty to provide him all the strength and guidance to run the House in a dignified and impartial manner, and to the satisfaction of the Members of this august House.

"The Minister of Steel and Mines (Shri Naveen Patnaik): Hon. Mr. Speaker, Sir, on behalf of Biju Janata Dal, I rise to felicitate you on your election to the office of hon. Speaker. If the destiny of the nation is vested in this august House, its destiny is vested in the hands of hon. Speaker. I am sure, Sir, in you this hon. House has found the most competent person to preside over it.

It is also a great honour to the nation that a dalit has risen to the high office of Speaker. You entered politics in 1982 but in a short span of five years, you rose to become District Panchayat Council head. You were elected to the Lok Sabha in 1991. Till recently you were the Minister in charge of Higher Education in Andhra Pradesh Government. Now you have entered the Lok Sabha for the second time and are elevated to the high office of den Speaker. On behalf of the Biju Janata Dal, I congratulate you once again and assure our full cooperation in the days to come.

MR. SPEAKER: Will any Member from the CPI party speak?

"Shri Indrajit Gupt (Midnapore): Mr. Speaker, Sir, I am not keeping very good health. So, I will just speak a few words, mainly to offer to you on behalf of the CPI group our sincere congratulations on your elevation to this august Chair and to assure you that you will receive our fullest cooperation in conducting this House according to the rules of procedure and the traditions of Parliament. I am personally, and my group also,
is delighted that after 50 years of Independence, we have today - I do not know whether wittingly or unwittingly - rectified an omission, which I think was a blot on the history of our country, namely, to elevate a member of your community, the Dalit community to this Chair. It should have been done long long ago, many years ago, but we failed to do it.

The last time we elected the Speaker, Sir, this House chose a leader and representative of the tribal people of the North-East, Shri Purno A. Sangma. It was done deliberately in order to send out a signal to those people who are inhabiting one of the most troubled regions of our country and I think that was a very wise step that we took and today by electing you, Sir, another message will go out to crores of Dalits and other deprived, exploited and down-trodden masses of our country that this House has not forgotten them and has given the highest honour in the Parliament to one of its representatives.

Sir, you are a fortunate man, if you will allow me to say so. In almost an overnight, you have acquired fame, fame not only in this country, I should say, fame abroad also because the speakership of the Indian Parliament is not a very small matter and people who had never heard your name - Sir, no offence meant to you - perhaps 24 hours ago will now and every day recognise, salute and respect a member of the Dalit community who has become the Speaker of this House. That is a matter of great satisfaction and pride to all of us.

We remember, Sir, that 50 years ago on the eve of Independence, the Prime Minister of a country which had kept us enslaved for 250 years - I am referring to Sir Winston Churchill - speaking in the House of Commons in London had warned that once the British left India, the country would fall to pieces, it could not survive as a single entity, these Indians would fight each other, there would be riots, there would be fighting and the country would be mined. That was Winson Churchill's dream perhaps and what he was wanting to foretell. Now, after 50 years everybody can see that India is one of the foremost republics in this world. We are proud to be citizens of this republic which is standing with its head held high in the international comity of nations.

I would just remind you that on the eve of this election through which we have just passed, millions of people of this country were having apprehension as to whether there would be a stable Government or were we in for another hung Parliament? These questions were there everywhere. Hung Parliament, perhaps, is not properly understood, but anyway, will there be a stable Government or will we again go in for an election within a year or two? This is a big challenge to all of us, because the credibility of this institution, the credibility of this Parliament itself is being questioned by the people throughout the country.

Who is responsible for that? We are responsible. The way we conduct ourselves, the way we behave, whether we are able to respond to the desires of the common man or not or whether we spend a lot of time here on matters which are really of no consequence. All these matters have to be seriously considered by all of us. When you are sitting there, Sir, I would request you to pay special attention to this question. The credibility of this House must be restored in the eyes of the people. The credibility has gone down. Why has it gone down? We all need to consider that in a self-critical way. I am sure that if we all seriously make an attempt, the House will be restored to its former pride and glory and you will have played very vital role in that.

Sir, I do not want to add anything more. I assure you of our cooperation and wish you well.

*m14

>
Sir, in a lighter vein, if I say something you should pardon me (Interruptions).

anything unparliamentary... (Interruptions)

SHRI RAM VILAS PASWAN: What is wrong in it?

MR. SPEAKER: Please continue.

... (Interruptions)

SHRI AJIT JOGI: Sir, he has every right to say what he is saying... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please continue.

SHRI MURASOLI MARAN: Sir, I am continuing. Sir, if I say something in a lighter vein you should pardon me. Yesterday, three minutes before the deadline of filing nominations that is by 11.57 a.m., you filed your nomination papers. One newspaper titled it like this:

"It was three minutes to stardom for Bala Yogi."

Sir, if somebody attains a position, people used to say, 'thank the stars'. Regarding yourselves, we should say, 'thank the Indian Airlines'. Otherwise somebody else would have been there... (Interruptions)

I share the views of hon. Thiru Barnala. As he has put it, you belong to a regional party and most importantly you belong to the oppressed section of the society. Therefore, we are doubly happy.

Sir, there is a feeling that to conduct the House one requires to have extraordinary genius. But I do not think so. In the House of Commons they used to say that to run the House you need what they call, "House of Commons' Tact". I would say to run this House you would require the 'Lok Sabha Tact'. You may like to ask how one could get it. When I entered this House in 1967 as a Member of the Lok Sabha, at that time hon. Thiru Neelam Sanjiva Reddy, the great son of Andhra Pradesh and the great son of India was adorning the Chair of the hon. Speaker. At that time the giants like Thiru Nath Pai, Thiru Madhu Limaye, Thiru A.K. Gopalan, Thiru Dange, Prof. N.G. Ranga, Thiru P. Ramamurthy, Thiru M.R. Masani, Thiru N.C. Chatterjee, the father of Thiru Somnath Chatterjee and a number of giants were there. They used to raise so many questions, so many points of order and so many other interruptions. Thiru Neelam Sanjiva Reddy sitting there as the Speaker never used to touch the rule book.
He used to run the House by tact and a sense of humour. Therefore, I would request you that if there is any problem you should follow the footsteps of that great son of Andhra Pradesh, Thiru Neelam Sanjiva Reddy.

Sir, the need to do business in this House is the paramount need of the hour. The danger of legislative paralysis is looming large because people has given a fractured mandate. It is a fractured verdict. They could have given 20 more there or 20 more here. But it did not happen. So, the members are equally poised. Therefore, the "political engineering", if I may use this word of euphemism, has to be adopted more often. I used to say "political engineering". This is what has happened today. In other words, the number game has to be played very correctly every day, every time and in every voting in this House. It is because Indian politics is bogged down in a morass of internal contradictions and conflicting political interests and seem to be drifting apart.

So, consensus becomes the key word, and that is what the hon. Prime Minister also stated in his television speech. But what is consensus? Consensus cannot be of the type which we have seen over the Speaker's election.

Sir, the Speaker has to play a critical role in a parliamentary democracy. He has to play the role of a school teacher, interpreter and the role of a person who cajolles with a carrot and controls and disciplines with a stick without exhibiting it. Most importantly, the Tenth Schedule of the Constitution has given a new dimension to the Office of the Speaker. The Speaker of the Lok Sabha is more powerful than the Speaker of the House of Commons. So, you have to play the role of a judge also -- an impartial judge. In some States, this power has been misused. The Speaker's post is the third highest constitutional office in our land, and we should not diminish the stature of the Office of the Speaker.

Sir, as the former Speaker has stated, "Bala" means "a child or a young person" and "Yogi" means "a sage". So, your name suggests that you are a young yogi. Now, this "Balayogi" should become a "Karmayogi". As the word "Karma" means "duty", you should do your duty in an impartial manner so that you get the appreciation from one and all and you become another Sangmaji and are able to conduct the House in a proper manner. As he very rightly said, we should not paralyse the House. There should not be a legislative paralysis just because everyone of us is an expert in paralysing the proceedings of the House. That is why, consensus is necessary and, I think, it will be offered and taken.

Sir, with this belief, on behalf of the DMK Party, I offer you our congratulations, felicitations and our promise of fullest cooperation.

*SHRI SHIVRAJ V. PATIL (LATUR): Sir, the Leader of the Congress Party has already spoken. I am standing here to speak as a former Speaker of this House. I know the ecstasy and the agony of the person who occupies that exalted position in this House. I would say that you may have more agony and less of ecstasy. I know that the situation in the House is such that unless every Member of this House and every leader of different political parties cooperate with the Chair, the task of the Chair is going to be quite difficult and onerous. I am sure that the experienced leaders who have occupied the positions of high office on that side and this side -- the Prime Minister, the Leader of the Opposition and the leaders of different parties -- have always cooperated with the Chair, and I have no doubt that the present Prime Minister, the present Leader of the Opposition and other leaders of different parties will cooperate with you.

Once I was asked: "What are the qualities that a Presiding Officer needs?" I had said that "it is good if the Presiding Officer understands the law, but it is not enough and that he should understand the political situation also because the decisions which have to be taken from that Chair are not only legal decisions -- they are certainly legal decisions -- but they have a political element also." So, it is not enough if the hon. Speaker or the Deputy-Speaker or the Chairperson understands the law and the political situation. What would be needed is the understanding of the psychology, that is, why a Member is standing up, why a Member is asking a question and why a Member is feeling agitated. If the Presiding Officer has full sympathy for the Member, I am sure that he would get full cooperation from the Member also. You are a person, I am sure, who has a lot of sympathy for
those who need the support and help. I am sure, from that Chair, you will be giving that kind of sympathy to all the Members.

Over and above all, the final point which I want to make and which is very important according to me is that the last quality that is required is the quality to control oneself. You are a yogi and a yogi has the quality to control oneself. If the Presiding Officer controls himself, then the House is controlled.

If the Presiding Officer feels ruffled, disturbed and confused, I am sure that is reflected in the House also. I have no doubt that in your name and in your personality, that quality of Yogi is there and that will help you.

May God help you.

* m17
While I would really urge upon you to be impartial and fair to all sections of the House, I do not urge upon you to be neutral but I would really urge upon you to be impartial and fair to all sections of the House.

I also appeal to you to act impartially and judiciously in the extraordinary political scenario that is presently prevailing in the House in order to hold the high democratic values and the essence of the Constitution.

We all know that it is not that easy to be a presiding officer of the House of this nature. Though we all say that this House has got its own prestige yet the Members have to rise up to the level. We know that on each occasion which this House had faced, there had been too much of trouble, there had been too much of disturbance and there had been problems which the presiding officer had to face during the conduct of the House.

I would like to say that we have found one quality in many of the presiding officers that we have seen. After I had come to this House, I have seen the presiding officers working with a lot of common sense. They had their own way in dealing with the problems. They were all doing it in a manner which was acceptable to all the sections of the House.

As many of the hon. Members have already said, I would also like to congratulate the former Speaker Shri P.A. Sangma as also other former Speakers like Shri Balram Jhakar and Shri Shivraj Patil who had all been a success in this House by getting the cooperation of each and every section of the House. But to be neutral is rather going to be a difficult thing. The term `neutral’ has also assumed a new meaning in the recent days. I would say that it may be better not to be neutral but it may be better to be impartial. So, I do not urge upon you to be neutral but I would really urge upon you to be impartial and fair to all sections of the House.
KUMARI MAYAWATI (AKBARPUR): माननीय महादेव, मैं आपकी नामशंका से पूर्व सचिव को बनाना चाहती हूँ, कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने कहा कि वे बल्लेबाजों के हिस्सेदारों हो यह सच नहीं है।

* Not recorded

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT AND MINISTER OF SCIENCE AND TECHNOLOGY (DR. MURLI MANOHAR JOSHI): Mr. Speaker, Sir, she cannot discuss the conduct of the Speaker of the U.P. Legislative Assembly in this House and such remarks should not go on record...

(Interruptions)

MR. SPEAKER: Yes. those remarks will not go on record.
मी आपल्याकडे आहे, त्याच्या म्हणजेच जनतेच्या आवश्यकतेच्या वेळी 80 वर्षांची स्वतंत्रता स्वतंत्रता स्वतंत्रता आणण्यासाठी माझ्या हानींमध्ये असाही नाही. आपण समजून मार्गदर्शन देऊ असाही? माझ्यासाठी विद्यमान हे साक्षात्कार हे साक्षात्कार हे साक्षात्कार सर्वोपरितर्पणी आहे. माझ्या विचारात या संदर्भात आपण समजून असाही नाही.
SHRI R. S. GAVAI (AMRAVATI): Sir, on behalf of the Republican Party of India, I am here to extend my sincere congratulations on your elevation to this highest post.

Sir, India is the largest democracy in the world in the true sense. The various articles published regarding the future of democracy in India express the hope that we are shaping in the proper way. A day was there when the chief architect of the Constitution of India, Dr. Babasaheb Ambedkar had offered 'one man, one vote and one value'. Many critics in India and outside including Mr. Churchill said: "Sorry, the formula adopted by Dr. B.R. Ambedkar, 'one man, one vote and one value' - will it be successful as the essence of democracy or not?" The reply given by Dr. B.R. Ambedkar to Mr. Churchill was, 'I am hopeful that democracy will develop in India. It will take ten years, twenty years or fifty years.' The forefather of the Constitution of India reposed faith in the praja, in the citizens of this country. Ultimately, through ups and downs we have proved that ours is the largest democracy.

You are a symbol of the largest democracy. A political thinker, regarding Parliament, has made an observation. He says, 'What is Parliament? Parliament is nothing but a holy temple of democracy.' What is Parliament? It is praja satta. The people of this country are the gods and goddesses. What does he say about us and about you? We are supposed to be the devotees, the representatives of the people to serve the cause of the public at large.

You are the custodian of the whole House, not just the party and the Members who have proposed and seconded you. Kumari Mayawati, my sister has been misunderstood. She means to say that merely according a high position to a person belonging to the Scheduled Caste will not serve the purpose. That is only an ornamental hypocrisy on the part of either the Ruling Party or the Opposition. The problem is that we are according position but dithering from the genuine problems of the weaker sections of the society, the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes. Unfortunately, there is no social agenda on national programme after the tenure of Shri V.P. Singh.

Why do I respect you? It is not just because you belong to a Scheduled Caste. But as the Leader of the Opposition Shri Sharad Pawar has correctly mentioned that you have a vast experience of dedicated service in the Zila Parishad and Panchayat Samitis. You have served as a Minister thus not because of the fact that you belong to a Scheduled Caste but because you deserved it.

Do we mean to say that the elevation of His Excellency, Shri K.R. Narayanan - was he elected as the President of India in the fiftieth anniversary of our Independence - was because he belonged to a Scheduled Caste? No. It is because he deserves it. He has proved his ability. So, do not be under the wrong impression that this post has been accorded to you only because you belong to a Scheduled Caste, but it is because of the inherent talent in you. You have to develop on it and prove that we are equally competent.

The one essence of political democracy is 'decision out of discussion'.

This is the essence of democracy. There is nothing wrong if you could allowed Kumari Mayawati to speak instead of asking her to sit down. This is the essence of democracy. So, there should be no bar on discussion.

MR. SPEAKER: Please conclude.

SHRI R. S. GAVAI (AMRAVATI): Sir, what for we are here? We have rules and procedures. Various procedures like Calling Attention, Question Hour and Adjournment Motion are the modus operandi for discussing in the House to deal the problems of the people of India. You are the custodian of not only the House but also to give justice to the problems relating to the Scheduled Castes, Scheduled Tribes, OBCs and minorities. You have also to see that secularism and national integration are strengthened. You have now become symbolic of
democracy. On behalf of my party, the Republican Party of India, I once again congratulate you and assure you of our full cooperation.

*mr23

SHRI. N. I., Member, NataPalata (Ponnani): Mohitram Sreekar Sahab, this Prorokar of荚印"  अनाथ नाम आपको स्पीकर के ओरहे पर फाइन किया है। मैं अपनी नामित से और अपनी पार्टी मुख्य लोग की नामित से आपको मुख्यमंत्री पेश करता हूं। इस ऐलान की सानवार रिवाज रही है और यह एक खुशी हलकाहै कि स्पीकर

... (वववाद)

Mohitram Sreekar Jaishiriyakta का सुपरिफ़िक और पार्लिमेंटारी रिवाज, पार्लिमेंट शान, पार्लिमेंट कार्यांक और जबाबदेह का पासवां होता है।

custodian of democracy and Parliamentary practice.

मैं आपसे यही उम्मीद रखते है कि आप इस पार्लिमेंटारी शान को बरकरार रखेंगे और इस ऐलान को उसकी सानवार रिवाज और उसकी सानवार कलाम और जवाबदेह के मुकाबले कराएं और इसमें हमने अपना नाम भी रोशन करेंगे।

वववाद स्पीकर शाहब, हमें यह दुखीत पश्चात हो गया है कि हम भी इस नामकरण को कठिन तथा जवाबदेह के मुकाबले चलाए जा रहे हैं तफ़ विरोधी जमानत और जमानत दुर्गम में हिज़ूरतान का नामित का नाम और भी ज्ञात रोशन हो। हिज़ूरतान ने कि एक बड़ा नामकरण था, उसकी जमानत को आन, शान और उसकी कहानी के अन्दर मगीद ज्ञाता हो लिखा/माना तत्कालिन तत्काल, कोआउर्जन आपके साथ रहेगा। इस मकसद को बाहर रख-columns कि यह ऐलान कलाम के साथ, जवाबदेह के साथ, अपनी शान के साथ चलता रहे।

स्पीकर साहब, आप जरा इस ऐलान पर एक नज़र डालिए। अपनी तस्करी में इसका तमाम बहुत ही नामकृत है।

It is a very delicately balanced House.

इस वग़न से आपकी निम्नमतियाँ और भी ज्ञाती बड़े जाती हैं। मैं सपनाना हूँ कि मानववाद साहब से लेकर आप तक मिलते ऐलान आए, उन तयार के अन्दर यह ऐलान एक नामकरण भरत युद्ध-वायु हो भांति करती है और आपको एक सक्षम आजादी के अन्दर गुलाल करता है।

ओंकार दलाला जारी हम यह चाहते है कि आप अपनी इस आजादी के अन्दर कार्यालय हों और उसके लिए हमारा तत्कालीन आपके साथ रहेगा।

मैं एक बात और बाले तौर पर कहना चाहता हूँ। गया आपकी भाँववाणी इतनी शान के साथ दी जा रही है।

... (वववाद)

MR. SPEAKER: No, no. We must have completed it by six O'clock. It is already 6.15 P.M. now. So, please conclude.

SHRI G.M. BANATWALLA (PONNANI)
SHRI VAIKO (SIVAKASI): Hon. Speaker Sir, it gives me immense pleasure to extend heartiest congratulations and felicitations to you on behalf of the Marumalarchi DMK and on behalf of myself for having been elected to the high office.

Sir, half a century has passed away since the dawn of Independence. Today is a red letter day in your public life. You have been elected as the custodian of the august House, Speaker of the House of the People of the largest democracy of the world which would send a message of hope and confidence to crores and crores of people who have been oppressed for many a century. That would be a fitting tribute to the memory to the Father of the Nation.

Sir, I am sure and confident that with your experience as a parliamentarian in the Tenth Lok Sabha, with your rich experience as the Chairman of the Zila Parishad of the State of Andhra Pradesh and with your experience as a Minister in your State, you would rise to any occasion to tackle any turbulent situation in the House.

Shri Yerrannaidu, when he was referring to your career, made a mention that you were a student leader of the Law College.

So, you would tackle any turbulent situation as the one which we witnessed some minutes ago.

Some people say that the people have given a fractured mandate. It is not so at all. The people have given a definite mandate for the BJP and other parties to form the Government. The people have given the mandate to Shri Atal Bihari Vajpayee to lead the country.

I wish you to protect the dignity, the decorum and the rich traditions of the House and also the rights of the Members for a full term of five years having Shri Vajpayee, the Leader of this House, as the Prime Minister of this country. From our side, we would extend all our cooperation to you to conduct the House.

I appeal to our friends from that side to extend the same cooperation. I fully share with the views expressed by hon. Shri Indrajit Gupta that a hundred crore people are watching what is happening in the Lok Sabha today. The whole world is watching us. So, we have to have self-introspection.

With these words, I congratulate you once again. I wish you success in your endeavour.

"SHRI AMAR ROY PRADHAN (COOCHBEHAR): Mr. Speaker, Sir, on behalf of my party and on my own behalf, I would like to congratulate you on this occasion that you have been elevated as the Speaker. When I am congratulating you, I cannot forget the Speaker of the Eleventh Lok Sabha who performed very well in the House.
It is not correct to say that you are an unanimous candidate or a consensus candidate. It is a question of the Speaker's election. When the election is there, naturally, you are from one side and we have another candidate from our side. We opposed you. But after all this, you are the custodian of this House. You are no more with a partisan spirit. You are now the impartial custodian of this House.

In this connection, I would like to request you to look to your right, to your left and to your front. You also please look to the back Benches and also look to the small groups like that of ours. Now, the party in power will have to keep in mind that their number in 1984 was only 'two'. It is a democracy. From this side only, they have now gone to that side. So, in a democracy, I think, Mr. Speaker, you have to perform that job. I hope, you will be able to keep the dignity of this House. I wish you good health.

"SHRI P. CHIDAMBARAM (SIVAGANGA): Mr. Speaker, Sir, on behalf of my party, the TMC, I rise to offer you my felicitations and congratulations. All Members of this House will immediately recognise that you have occupied this Chair to a rather an unusual reception.

The reception has been unusual because you were, in many ways, an unusual candidate and the election was an unusual election. When your candidacy was announced you did not ask us for our support, yet we are happy to congratulate you.

Sir, all of us are limited by time and circumstances. Every Member of this Lok Sabha and indeed you, are elected for a period not exceeding five years. It is not what we say today that will enter the pages of history but it is what we will say when each one of us lays down office that will enter history.

Sir, I am tempted to quote a Tamil couplet:

"Thakkar Thahavilar Enbadhu
Avaravar Etchathal Kanappadum"

The great and the not so great will be determined by what they leave behind them. You have heard tributes paid to your predecessors. I sincerely hope that you will safeguard the rights of the Members of this House, you will uphold the great traditions of this House and that you will win not only our cooperation but also our esteem and gratitude.

Sir, on behalf of my party I wish you success, I wish you best of health and I wish you all that is necessary to conduct this House. My party offers you sincere congratulations.

* m27

PROF. SAIFUDDIN SOZ (BARAMULLA): Mr. Speaker, Sir, on behalf of my party, the Jammu & Kashmir National Conference, I join the hon. Prime Minister, the hon. Leader of the Opposition and many other Members who felicitated you when you occupied this august office.

In my scheme of things it would have been better if you had occupied that high office through a consensus. In fact, to the best of my knowledge, a consensus was growing the night before last but yesterday morning that was shattered. Now that you have occupied that high office, I can only join the hon. Members in offering you not only congratulations but also my party's whole-hearted cooperation in the days to come.

I do not agree with people who offer advice to personalities who occupy that high august Chair. I have seen and it is my experience that every person who sits there has his own style. I saw Dr. Balram Jakhar, Shri Shivraj Patil and Shri Sangma in that Chair. All of them had their own styles. So, no word of advice is required for the hon. Speaker as to how to conduct the House.

Sir, I have a thought to share with you and the thought suggests as to how many are needed in this House. Shri Sangma reminded us that we were sometimes before a live telecast by Television! Now the world has become so
small that before even the Doordarshan telecasts a thing in India it would be highlighted and telecast by the Star TV or the Zee TV.

We have to be responsible and we are responsible. Sometimes, hard and hot words bring a new colour to the Lok Sabha. But some of us sometimes cross the rekha. What do we do on that occasion?

I request you to kindly make an effort to evolve a system of self-discipline. I can assure you that my party, particularly myself and my colleagues here, shall contribute to that evolution of self-discipline. This is needed in this august House. When I was talking about the self-discipline, I remember a couplet in the realm of my mind and before I conclude I wish to quote that couplet.

ступ ки фатті се каст сактата і сірре ке тиггар,

мрє пахї пе сілімей нрём б нанук бєвдхар.

The Speaker's appeal may not always affect a Member who wants to say whatever he or she wants to. Hon. Speaker should lead all of us to the evolution of self-discipline. I quoted this couplet only for this reason.

Before I conclude, I must place on record that Shri Sangma while occupying that Chair proved his high level of emancipation and integrity. All this is going on record. It is no secret that many of us wanted Shri Sangma to be a consensus candidate for the post of Speaker. This is an open secret now. Now that you have occupied that exalted Chair, I have no doubt that you will prove your mettle and give the kind of leadership that this august House needs. I wish you well in your task for the future.

MR. SPEAKER: It is already 6.30 P.M. I have two more names. Shall I call these two names also? I think, it will take another twenty minutes.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes Sir.

*m28

SHRI K. BAPIRAJU (NARASAPUR): Sir, I am a few hours old baby of this House. I have just taken oath today only and you have given me an opportunity to offer my congratulations to you. We travelled together from Hyderabad to Delhi. You could reach here and file your nomination in the last minute. I only feel that you are blessed by the God. It is a miracle that you could make it and file your nomination in the last minute. I feel that the BJP and the TDP, your original Party, have become instrumental in your being elected as the Speaker.

I wish to share my thoughts here. I am two-decades old MLA of a State to which you also belong. I want to be very very cautious because I know my limitations. In my political career, I have never crossed my limitations. But today, in the political system that we have in our country, people feel disgusted. We give the least respect to this kind of honourable post to which everyone of us should stand in ovation. We should see to it that we develop respect for the society and for everybody.

I wish to mention here about Shri Sangma. The shortest man of the Parliament has grown like an oak tree in his character. I was observing that Shri Sangma, the man who just lost an opportunity to become a consensus candidate for the post of Speaker, was offering his felicitations to you with a heart, with a smile. This is his quality. That gentleman was offering his best wishes to you with a smile on his face and I expected a smile on your face also. Please smile, Sir. Your smile will not cost you anything. It will rather help you.

MR. SPEAKER: A lot of time is there for that.
SHRI K. BAPIRAJU (NARASAPUR): Finally, I do not want to make a long speech. I wish you all the best. God will help you. In politics there are no murders and only suicides. It is left to you, how you wish to bring up the institution. You take the example of Shri Shivraj Patil, he is a gentleman.

Take the case of Dr. Balram Jakhar. He was a shrewd man. Our own man Shri Sanjiva Reddy, who passed only Tenth Standard, proved to be one of the best Speakers. Please keep them in mind and bring credit to the State, to the country and to the chair that you are occupying.

* m29

SHRI B.M. MENSINKAI KAYI (DHARWAR - SOUTH): Mr. Speaker Sir, on behalf of my party Lok Shakti, I rise to felicitate and Congratulate you on this auspicious occasion. Sir, I am very glad that you have been elevated to this prestigious post of this August House. Our party shall extend full cooperation to you in conducting the business of the House. You hail from Andhra Pradesh, a neighbour of Karnataka. This fact has made me to feel supremely happy about your elevation to the post of Honourable Speaker.

While congratulating you, many honourable colleagues have already mentioned about poverty that is prevailing in our country even after fifty years of Independence. I, therefore, urge upon you Sir, to enthuse the Members of this house to work hard and root out poverty from this country. There is an urgent need to provide medical facilities particularly to the poor people living in remote villages.

Finally Sir, we have to maintain the dignity and decorum of this House. I hope you would guide us properly and help us to keep up the prestige of the House. I pray God to bless you with courage and confidence. I am sure that you would be a successful Honourable Speaker.

Sir, I thank you for giving me this opportunity to express my views on behalf of my party Lok Shakti and with these words I conclude my speech. (ends)

----------------------------------

* Translation of the speech Original in Kannada

*m31

MR. SPEAKER: Hon. Members, I take this opportunity to heartily congratulate all of you who are elected to the Twelfth Lok Sabha. I particularly compliment you for furthering the cause of democracy by participating in the election in the true spirit of democracy.

I also compliment all those who have contested the elections but could not make it to this august House, for their contribution is no less. It is time for all of us to leave behind the memories of the electoral contest and strive collectively to live up to the expectations of the people who have given us the mandate.
It is with a deep sense of gratitude and humility that I assume the Office of the Speaker of the 12th Lok Sabha. I sincerely thank the hon. Members for this honour. I am hopeful that the demands of the duty will be made lighter by the active cooperation of all the hon. Members.

I need not remind the hon. Members of the socio-political transformation that our country is undergoing. Over the years, the composition of this august House is also changing, reflecting the socio-political transformation. This august House has always endeavoured sincerely to fulfil the mandate given to it through the hon. Members. I am particularly conscious of the composition of the 12th Lok Sabha and the expectations that flow out of it. Our democracy has successfully faced several challenges. This august House has withstood the test of the time and emerged as a pioneering institution upholding the democratic and social values and the philosophy enshrined in the Constitution.

Dear Members, the 12th Lok Sabha has got the people's mandate to launch our country into the next millennium. This is a unique responsibility bestowed on this august House. As a constituent of the Legislature for the Union and as its distinguished Members, we have an important responsibility to shoulder at this crucial time. Since Independence, our country has made impressive gains and still there is much to be done. The Legislature is an effective vehicle of change. Hon. Members have an important role to perform in pioneering the process of change and guiding the destiny of our nation. We have a solemn responsibility of ensuring that the constructive energies of our people and the Government are effectively channelised towards fulfilling the aspirations of our nation.

Hon. Members, I am conscious of the responsibility bestowed on me as the Presiding Officer of this august House. I have always believed in the concept of `collective wisdom'. I shall always be guided by this faith in discharging my duties. The institution of `Speaker' has acquired great character and strength over the years due to the significant contributions of my worthy predecessors. This institution has moved from strength to strength on the force of the conventions and the highest traditions, while at the same time addressing itself to the new challenges based on the collective wisdom of hon. Members. I particularly recall the contributions of my worthy immediate predecessor, Shri P.A. Sangma in this regard. His goodwill and counsel shall be a source of great strength to me.

In my view, the Presiding Officer is as important as the first and the last Member of this House. This august House has the benefit of drawing upon the vast experience of its senior Members in moulding and guiding the new. The spirit of cooperation for collective good is the essence of democracy. I shall endeavour to ensure that this spirit prevails all through. I shall do my best to uphold the true democratic traditions and defend the privileges of this august House and its hon. Members. Parliament is the conscience keeper of our nation and reflects the sovereign will of the people of India. As a constituent of Parliament, the responsibilities of this august House and its hon. Members are manifold. It shall be my utmost effort to ensure that these responsibilities are discharged in the best possible manner. The Presiding Officer is always guided by a sense of justice and fair play.

I am grateful to the hon. Members for their warm expressions about me and for assuring me their cooperation. I particularly seek the cooperation of the Leader of the House and the Prime Minister, Shri Atal Bihari Vajpayee, the Leader of the Opposition, Shri Sharad Pawar and all the Members in the direction of this august House making a durable contribution to realise the ideals and goals enshrined in the Golden Jubilee Resolution which was adopted by the Parliament.

Any institution is as good as its Members choose to make it. We shall collectively endeavour to set new standards and reach higher levels of consciousness so that we will be able to live up to the expectations. Let us all join hands in heralding a new era into the new millennium.

The House stands adjourned to meet tomorrow, the 25th March, 1998, half an hour after the President's Address.

18.46 hrs
The Lok Sabha then adjourned till half-an-hour after the Address
by the President on Wednesday, 25 March, 1998/4 Chaitra, 1920 (Saka).

-------

*m10*